❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3
सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।
O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 43, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 अक्तूबर, 2019 से रविवार 3 नवम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 136वां निर्वाण दिवस सम्पन्न

एकरूपीय यज्ञ की ज्योति से प्रकाशित हुआ रामलीला मैदान

महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर चलकर ही होगा भारत का नया भाग्योदय - एस. के. शर्मा

हजारों की संख्या में यज्ञ करते हुए बच्चों को देखकर मिलती है अपार खुशी और प्रेरणा - महाशय धर्मपाल

ऋषि निर्वाण दिवस पर आर्यसमाज के उत्थान के प्रति अपने मन को करें संकल्पित - धर्मपाल आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कार्यों को और मजबूती से करने का लिया संकल्प

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से हर आर्य बने वैदिक ज्ञान का दीपक - डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से संभव हुआ मानव मात्र का उद्धार - सज्जन सिंह कोठारी

महर्षि के जीवन के अन्तिम दृश्यों को नाटिका रूप में देखकर सबकी आँखें हुई नम

अनुशासित - व्यवस्थित रूप से हजारों की संख्या में सामूहिक एक रूप यज्ञ से सारा वातावरण हुआ यज्ञमय

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के 136वें निर्वाण दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आर्यजनों को सम्बोधित करते श्री एस. के. शर्मा जी (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)। श्री एस. के. शर्मा जी को वेद भगवान भेंट करते स्वामी देवव्रत सरस्वती जी, सुरेन्द्र रैली जी, अजय सहगल जी, योगेश मुंजाल जी एवं श्री धर्मपाल आर्य जी। समारोह अध्यक्ष के रूप में महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धांजलि एवं प्रेरणा प्रदान करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एम.डी.एच. एवं प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य)।

- शेष समाचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 4-5-6 पर

वेद-स्वाध्याय

हम सर्वत्र मातृभूमि के यश की रक्षा करें

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते।। - अथर्व० 12/1/56
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता - **भूमिः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **अधि भूम्याम्** = इस भूमि पर **ये ग्रामाः** = जो ग्राम हैं **यद् अरण्यम्** = जो जंगल हैं **याः सभाः** = जो सभा हैं **ये संग्रामाः** = जो लड़ाइयाँ हैं **समितयः** = और जो समितियाँ होती हैं, **तेषु** = उन सबमें हम, हे भूमिमातः! **ते** = तेरे लिए **चारु** = उत्तम ही वाणी **वदेम** = बोलें।

विनय - हे भूमिमातः ! हम प्रत्येक स्थान में, प्रत्येक समय में, प्रत्येक विषय में तेरे लिए चारु ही भाषण करें, तेरे लिए उत्तम वाणी ही बोलें। सदा ऐसी बात बोलें जोकि तेरे यश को बढ़ानेवाली हों, तेरे लिए हितकर हों, तेरी उन्नति करने वाली हों। हम तेरे ग्रामों-नगरों में रहें तो हमारे अन्दर परस्पर प्रेमपूर्वक तेरी ही चर्चाएँ चलें, तेरे गौरवपूर्ण भूत की कथाएँ कही जाएँ और तेरे उज्ज्वल भविष्य की बातें हों। हम तेरे जंगल में हों तो वहाँ अकेले भी हम तेरे स्तुति-गीत गाएं, तेरे प्रेम की गीतियाँ गाते हुए आनन्द पाएँ। यदि तेरी सभाओं में जाएँ तो वहाँ तेरे पक्ष में भाषण करें, तेरे उन्नतिकारक प्रस्तावों पर हमारे प्रभावशाली वक्तव्य हों और यदि संग्रामों में खड़े हों तो वहाँ उच्चस्वर से तेरे ही नारे लगाएँ, अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए तेरे जयघोषों से आकाश को गुँजा देवें और जब तेरी समितियों में बैठे हों तो खूब सोच-समझकर पूरी तरह गम्भीर विचार करके ही मुख से शब्द निकालें, जिससे कभी अनजाने में भी हमारी वाणी द्वारा तुम्हारा द्रोह न हो सके। हे भूमिमातः! हमारी वाणी सदा तुम्हारे लिए उत्तम बोलनेवाली हों, सदा तुम्हारी सेवा के लिए समर्पित हों।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धर्म परिवर्तन की धमकी और राजनीतिक नाटक

राजनीतिक संकट से निकलने के लिए धर्म को हथियार बनाना आज राजनेताओं का शोक बन गया है या मजबूरी, इस पर शोध होना जरुरी सा हो गया है। हाल ही में बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती ने एक बार फिर धर्म परिवर्तन की धमकी दी है। अबकी बार महाराष्ट्र चुनाव के दौरान नागपुर में एक जनसभा को संबोधित करने पहुंचीं और कहा कि मैं भी बाबा साहब भीमराव आंबेडकर की तरह बौद्ध धर्म की अनुयायी बनने के लिए दीक्षा अवश्य लूंगी लेकिन यह तब होगा जब इसका सही समय आ जाएगा।

हालाँकि इससे पहले भी मायावती कई बार यह धमकी दे चुकी हैं। थोड़े समय पहले आजमगढ़ में एक रैली को संबोधित करते हुए बसपा अध्यक्ष मायावती ने कहा था अगर सत्ताधारी दलों ने दलितों, मुसलमानों और आदिवासियों के प्रति अपनी सोच नहीं बदली तो वे लाखों समर्थकों के साथ बौद्ध धर्म अपना लेंगी। लेकिन वोटों की राजनीति की धार्मिक ब्लैकमेलिंग में इस बात का जवाब कौन देगा कि अपने समर्थकों यानि दलितों, मुसलमानों और आदिवासियों में उसके साथ उसके कितने मुस्लिम समर्थक बौद्ध धर्म स्वीकार करेंगे?

इस बार भी उनके भाषण से प्रतीत हो रहा है कि जैसे वह मोदी सरकार और उसके समर्थित हिंदूवादी दलों को चेतावनी दे रही हों कि मैं दलितों की विशाल आबादी का धर्म बदलकर उन्हें बौद्ध बना दूंगी तो तुम हिंदुत्व की राजनीति कैसे करोगे? मायावती के बारे में कहा जाता है कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के धर्म परिवर्तन के पचास साल पूरे हुए तो मायावती 14 अक्तूबर 2006 को नागपुर बौद्ध दीक्षाभूमि गई थीं, जहां उन्हें पहले किए गए वादे के मुताबिक बौद्ध धर्म अपना लेना था। यह वादा कांशीराम ने किया था कि बाबा साहेब के धर्म परिवर्तन की स्वर्ण जयंती के मौके पर वह खुद और उनकी उत्तराधिकारी मायावती बौद्ध धर्म अपना लेंगे। उसी दौरान मायावती ने वहां बौद्ध धर्मगुरुओं से आशीर्वाद तो लिया लेकिन सभा में कहा, मैं बौद्ध धर्म तब अपनाऊंगी जब आप लोग मुझे प्रधानमंत्री बना देंगे। बौद्ध भिक्षु भी सोच में पड़ गए कि यह विशुद्ध धर्म के नाम पर राजनीति कर रही है।

जनवरी, 1956 में दिल्ली के एक साधारण परिवार में जन्मीं मायावती 1984 में भारतीय राजनीति का हिस्सा बनती हैं। गरीब दलित दबे कुचले वर्ग की राजनीति करते-करते 1995 को देश के सबसे बड़े राज्य उत्तरप्रदेश की मुख्मंत्री और देखते-देखते करोड़ो अरबों रुपये की मालकिन बन जाती हैं। परन्तु वर्तमान समय में मायावती अपने राजनीतिक जीवन के संकट काल से गुजर रही हैं, इस वर्ष समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन किया कुछ सीट भी हासिल की पर गठबंधन नवजात अवस्था में ही दम तोड़ गया। लिहाजा वह अब अकेली है तो वह सब कुछ करेगी जो उसे सत्ता तक पहुंचा सकता है। शायद उनकी चिंता इस बात को लेकर भी कि सामाजिक रूप से दलितों को अलग रखने की जो खाई उसने खोदी थी फिलहाल वह खाई पटती नजर आ रही है।

आज नेताओं को धर्म परिवर्तन की धमकी या इस तरह के राजनीतिक नाटक से बाज आना चाहिए। धर्म के नाम पर गुमराह करना बंद होना चाहिए। राजनेताओं को भूख, बेरोजगारी, कुपोषण भ्रष्टाचार आदि समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। राजनेता जब धर्म को निज स्वार्थ के लिए उपयोग करें तो धर्म का इससे बड़ा दुर्भाग्य भला क्या होता होगा? लेकिन धर्म और राजनीति के घालमेल के कारण विचित्र परिस्थितियाँ निर्मित होती जा रही हैं। इसमें जितने सवाल हैं उतने जवाब नहीं हैं। धर्म और राजनीति का घालमेल सदियों से होता आ रहा है किन्तु इसका वर्तमान स्वरूप काफी व्यथित करने वाला है। कला, संस्कृति से लेकर अब धर्म भी राजनीति के मंचों पर खड़ा नजर आ रहा है। यह स्थिति क्यों बनी और क्या ऐसी ही स्थिति हमेशा बनी बनी रहेगी, यह सवाल भी सामने खड़ा है?

असल में देखा जाये तो मायावती को वोट के अलावा न तो दलितों से कुछ लेना देना, न धर्म से क्योंकि इससे पहले भी वह अनेकों मौकों पर बौद्ध बनने की धमकी दे चुकी है, इसी का परिणाम यह है कि इस बार बौद्ध धर्मगुरुओं ने उन्हें गंभीरतापूर्वक नहीं लिया। जानकार कह रहे हैं कि आधुनिकता की दौड़ में जब बाजार की शक्तियां दुनिया पर प्रभावी हैं तो दलित केवल एक राजनीतिक शब्दावली बन कर रह गये हैं। कभी के समय में आदिवासी को साथ लेकर, पिछड़े कमजोर को सामाजिक रूप से उभारने के लिए कांशीराम ने पार्टी का जो ढांचा खड़ा किया था, वह बिखरा ही नहीं, समाप्त भी हो गया है। आज दलितों, पिछड़ों, और अल्पसंख्यक समुदायों को लेकर जो उसकी राजनीतिक जमीन थी, वह ध्वस्त हो चुकी है, कारण अधिकांश दलित समुदाय के लोग अपने नेताओं की हकीकत समझ चुके हैं। सबसे बड़ा सवाल भी यही है कि स्वयं को बौद्ध बनाकर मायावती कोई राजनीतिक उद्देश्य हासिल करना चाहती हैं या दलितों का उत्थान? या फिर इसी तरह दलितों के नाम पर राजनीति की रोटी सिकती रहेगी।

हालाँकि धर्म के बारे में सामान्य रूप से कहा जाता है कि यह जीवन जीने का रास्ता बताता है। लेकिन यदि वर्तमान हालात पर गौर करें तो यह सत्ता तक जाने का रास्ता भी तलाश करता है। आज के दौर के नेता न केवल धर्म को बल्कि साधारण सी समस्याओं का भी राजनीतिकरण और धार्मिककरण करने से नहीं चूकते। इसीलिए मायावती को हमारा सुझाव है बौद्ध धर्म और महात्मा बुद्ध के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटी सेकने से पहले एक बार महात्मा बुद्ध का जीवन पढ़ लेना चाहिए। बुद्ध ने मोक्ष (निर्वाण) के लिए राजपाट छोड़ा था और यह लोग अपने राजपाट के निर्माण के लिए आज महात्मा बुद्ध का प्रयोग कर रहे हैं। इस मामले में दलित चिंतक एसआर दारापुरी कहते हैं कि धर्म व्यक्तिगत मामला है। वह चाहे कोई धर्म अपना लें इसके लिए धमकी देने की क्या जरूरत है? फिर भी अगर मायावती बौद्ध हो ही जाएं तो सवाल ये भी है कि इससे किसी का नुकसान क्या होगा और धर्म बदल देने से मायावती का लाभ क्या होगा?

- ***सम्पादक***

.....मायावती के बारे में कहा जाता है कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के धर्म परिवर्तन के पचास साल पूरे हुए तो मायावती 14 अक्तूबर 2006 को नागपुर बौद्ध दीक्षाभूमि गई थीं, जहां उन्हें पहले किए गए वादे के मुताबिक बौद्ध धर्म अपना लेना था। यह वादा कांशीराम ने किया था कि बाबा साहेब के धर्म परिवर्तन की स्वर्ण जयंती के मौके पर वह खुद और उनकी उत्तराधिकारी मायावती बौद्ध धर्म अपना लेंगे। उसी दौरान मायावती ने वहां बौद्ध धर्मगुरुओं से आशीर्वाद तो लिया लेकिन सभा में कहा, मैं बौद्ध धर्म तब अपनाऊंगी जब आप लोग मुझे प्रधानमंत्री बना देंगे। बौद्ध भिक्षु भी सोच में पड़ गए कि यह विशुद्ध धर्म के नाम पर राजनीति कर रही है।.....

हाल ही में बांग्लादेश में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा पर विशेष

बांग्लादेश को इस तरह बनाया जा रहा है इस्लामिक मुल्क

.....पिछले दिनों 1971 के मुक्ति संग्राम बांग्लादेश के खिलाफ साजिश में जब एक इस्लामी नेता दिलावर हुसैन सईदी को मौत की सजा सुनाई गयी तो उससे शुरु हुई हिंसा में तीन हिंदुओं के मंदिर, एक बौद्ध मंदिर, 15-16 बुद्ध की प्रतिमाएं, एक अनाथालय और एक उच्च विद्यालय को जलाया और तोड़फोड़ की गयी जबकि इस्लाम से जुड़े सभी धार्मिक स्थानों को इससे दूर रखा गया।.....

शायद कोई ज्वलनशील पदार्थ उतना तेजी से आग नहीं पकड़ता जितनी तेजी से मजहबी भावना। हाल में एक बार फिर बांग्लादेश सुलग उठा वहां बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए हैं। साम्प्रदायिक दंगे में पुलिस की गोली से चार लोगों की मौत भी हो गई। हिंसा की वजह एक हिंदू युवक बिप्लब चंद्र बैद्य की फेसबुक आईडी से एक टिप्पणी की गई थी। जिसमें कथित तौर पर पैगम्बर की निंदा की गई थी। इसके बाद करीब 20 हजार लोगों की भीड़ युवक को फांसी देने की मांग कर रही थी।

इस घटना में आरोपी हिंदू युवक ने पुलिस को बताया कि उसका फेसबुक अकाउंट हैक हो गया था, उसे खुद नहीं पता कब कहाँ किसने उसके अकाउंट से यह पोस्ट डाली है। लोग इसे मानने को तैयार नहीं, स्थानीय इस्लामिक और मदरसा संगठन सजा देने की मांग को लेकर सड़क पर प्रदर्शन करने लगे। इसे लेकर उन्होंने एक बड़ी पंचायत भी बुलाई थी।

देखा जाये तो बांग्लादेश में यह कोई नई घटना नहीं है। वहां से अल्पसंख्यक हिन्दू और बौद्ध समुदाय को मिटाने का यह नाटक कई बार बांग्लादेश की सड़कों पर खेला गया है। पहले किसी अल्प संख्यक युवा को निशाना बनाते हुए उसका सोशल मीडिया अकाउंट हैक किया जाता है और फिर पैगंबर के खिलाफ कोई पोस्ट करके भीड़ को इकट्ठा किया गया और अल्पसंख्यक समुदाय के मंदिरों में तोड़फोड़, घरों में लूटपाट तथा व्यभिचार किया जाता है। बांग्लादेश में पहले भी इस तरह की घटनाएँ हो चुकी हैं।

साल 2012 में कॉक्स बाजार के पास रामू नाम की जगह पर ऐसी ही घटना हुई थी। वहां बौद्ध आबादी अधिक रहती है। वहां उत्तम देव नाम के एक बौद्ध युवक की फेसबुक आईडी हैक हुई थी और इस मामले में भी ईश निंदा का इल्जाम लगाया गया था। इसके बाद कई बौद्धों के घरों में आग लगा दी गई और कई बौद्ध मंदिरों को नुकसान पहुंचाया गया। इसी तरह 2016 में ब्रामन बारिया जगह पर एक हिंदू युवक के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ था। ऐसी कई अन्य घटनाएं हुई, लेकिन इन मामलों में किसी को सजा हुई हो ऐसा कभी नहीं सुना गया। ताजा घटना में भी अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

सभी जानते हैं बांग्लादेश की 16.80 करोड़ की आबादी में 90 प्रतिशत लोग मुसलमान हैं। जिसे वहां के कट्टरपंथी नेता पूरा सौ फीसदी करना चाहते हैं पिछले दिनों 1971 के मुक्ति संग्राम बांग्लादेश के खिलाफ साजिश में जब एक इस्लामी नेता दिलावर हुसैन सईदी को मौत की सजा सुनाई गयी तो उससे शुरु हुई हिंसा में तीन हिंदुओं के मंदिर, एक बौद्ध मंदिर, 15-16 बुद्ध की प्रतिमाएं, एक अनाथालय और एक उच्च विद्यालय को जलाया और तोड़फोड़ की गयी जबकि इस्लाम से जुड़े सभी धार्मिक स्थानों को इससे दूर रखा गया।

इस तरह के विचारों से बांग्लादेश में बढ़ता कट्टरपंथ दिखता है। बांग्लादेश एक धर्मनिरपेक्ष देश हैं यहां मुस्लिमों का बहुमत हैं बांग्लादेश में हजारों चरमपंथी समूह हैं जो वहां के अल्पसंख्यक वर्ग के लिए हर समय खतरा है। इनके खिलाफ बोलने वालों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं रखते हैं। इस तरह की अवधारणा के पीछे कोई बुनियाद हो या न हो पर पूरी दुनिया इस बात से परिचित है कि बीते कुछ सालों में बांग्लादेश में धर्मनिरपेक्ष लेखकों, ब्लश्वगरों, प्रोफेसर, समेत अब तक दर्जनों लोगों की हत्या हो चुकी है।

बात केवल धार्मिक स्थानों तक सिमित नहीं है कभी बांग्लादेश की नींव भी भारत की तरह धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों पर रखी गई थी। वहां की आजादी के लिए हिन्दुओं के बलिदान कम नहीं थें लेकिन बहुत कम समय में ही वहां साम्प्रदायिकता इस कदर हावी हुई कि अक्टूबर, 2001 जब पूर्णिमा रानी के घर पर करीब 30 लोगों ने हमला किया। उनका कुछ लोगों से जमीन को लेकर विवाद था। जिसकी कीमत मासूम पूर्णिमा ने चुकाई। हमलावरों ने माता पिता के सामने ही पूर्णिमा को हवस का शिकार बनाया था। जब दर्द से तड़फती बेटी की हालत को देख एक मां को एक कट्टरपंथी से कहना पड़ा, था "अब्दुल अली" मैं तुमसे रहम की भीख मांगती हूं, जैसा तुमने कहा मैं मुसलमान न होने की वजह से अपवित्र हूं लेकिन मेरी बच्ची पर रहम करो। मै तुम्हारे पांव पड़ती हूं, वह अभी 14 साल की है, बहुत कमजोर है। अपने अल्लाह के लिए कम से कम एक-एक कर बलात्कार करो। यही नहीं अप्रैल, 2003 में एक किशोरी विभा सिंह स्कूल जाने के लिए घर से निकली थी जहाँ से उसका अपहरण कर लिया और अगले छह दिन तक खुलना शहर में उसे तीन अलग-अलग घरों में रखा गया जहां बड़ी निर्ममता से उसको शारीरिक यातनाएं दी गई। इतना ही नहीं, गुंडों ने बर्बरता की सभी सीमाएं लांघीं और उसके शरीर के विभिन्न अंगों पर ब्लेड और चाकू से चीरा लगाया। न जाने बांग्लादेश में ऐसी कितनी घटना धर्म के नाम पर होती है। लेकिन भारत के बहुत पढ़े लिखे और अत्यधिक शिक्षित कथित धर्मनिरपेक्षवादी, अभिव्यक्ति के नाम पर छाती कूटने वाली सेकुलर जमात को इन मासूमों की सिसकियाँ सुनाई नहीं देती। – ***राजीव चौधरी***

प्रेरक प्रसंग

सिख जाट कैसे बना आर्यसमाजी?

गतांक से आगे –

बड़ा सुन्दर पुस्तकालय था। उसके निजी पुस्तकालय में आर्यसमाज का सब महत्त्वपूर्ण साहित्य था। ऋषि के सब ग्रन्थ थे। वीर लेखरामजी, पण्डित आर्य मुनि जी का सारा साहित्य, 'सद्धर्म प्रचारक' की सब फाइलें, पण्डित भीमसेन के आर्यसिद्धान्त की पूरी फाइलें तथा अन्य आर्यविद्वानों के ग्रन्थ इन्होंने संग्रहीत किये। हरिसिंह ने लताला (स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के ननिहाल) में कई एक को आर्य बनाया। वहाँ उदासी साधुओं के डेरा की संस्कृत पाठशाला के कई अध्यापकों को आर्यसमाजी बना दिया।

इसी डेरा के महन्त पण्डित विष्णुदासजी के सत्संग से केहरसिंह (स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी का पूर्व नाम) आर्यविचारधारा से विभूषित हुआ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम इस ज्वाला को अखण्ड प्रचण्ड रक्खें। प्रभु करे हरिसिंह जैसे वीरों के दिल की आग हमारे सीनों को भी गर्मा दे।

– ***प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

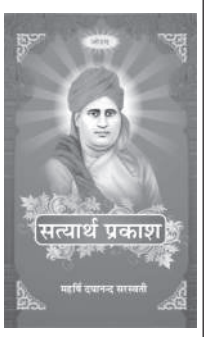

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ★ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ★ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ★ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से आयोजित 136वें ऋषि निर्वाण

आर्य समाज के संस्थापक, युग प्रवर्तक, समाज सुधारक, लोकोपकारी, महान वेदज्ञ महर्षि दयानंद सरस्वती ऐसे महापुरुष थे जिनके ज्ञान के आलोक से संपूर्ण विश्व में एक नई क्रांति का उदय हुआ। ऋषिवर ने संपूर्ण मानव जाति को जागृत किया, स्वयं का स्वयं से परिचय कराया, सिर उठाकर जीना सिखाया, भक्त और भगवान के बीच जो ढोंग, पाखंड और आडंबर अवरोध बनकर खड़े थे, उन्हें वैदिक ज्ञान की ज्योति से दूर भगाया, मानव समाज के दु:ख, पीड़ा और सन्तापों को ऋषिवर ने अपने कोमल हृदय में महसूस किया और सबको सुख, शांति, समृद्धि तथा कल्याण का मार्ग दिखाया। किंतु महर्षि दयानंद सरस्वती जी को उनके रसोइए ने काल कूट जहर दे दिया, जिसके कारण 30 अक्टूबर 1883 ई. को ऋषिवर दिवाली के दिन देह त्यागकर निर्वाण को प्राप्त हो गये और तभी से लगातार आर्यसमाज उनका निर्वाण दिवस मनाता आ रहा है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के द्वारा दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं और गुरुकुलों की ओर से 26 अक्टूबर 2019 को सायंकाल दिल्ली के रामलीला मैदान में एक भव्य ऋषि निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों के साथ-साथ आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों के बच्चे सम्मिलित हुए।

ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर श्री. वी.पी. शास्त्री के ब्रह्मत्व में श्रीमती कविता आर्या एव श्री राजेंद्र पाल आर्य, श्रीमती बाला जी और श्री विभु सहदेव जी, श्रीमती हविषा जी एवं श्री हिमांशु बंसल जी, श्रीमती उषा जी एवं श्री महेश कुमार रिहानी जी यजमान बनें। सभी आर्यजनों ने उन्हें फूलों से आशीर्वाद दिया। इसके उपरांत श्री एस.एस.कोठारी जी ने ध्वजारोहण किया और उनके साथ आर्य प्रादेशिक सभा के मंत्री श्री एस.के.शर्मा जी, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री योगेश मुंजाल जी, श्री अजय सहगल जी, डॉ. देवव्रत स्वामी जी, श्री विनय आर्य जी आदि महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री एस.एस.कोठारी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती के उपकारों को याद करते हुए आर्य समाज की विश्व में की जाने वाली सेवाओं पर गहराई से प्रकाश डाला। श्री कोठारी जी ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से ही यज्ञ, योग और स्वाध्याय जैसी मानव कल्याण की क्रियाएं पुन: आरंभ हुई। जिनके बल पर आर्यसमाज नित-निरंतर सेवा के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 136वें निर्वाण दिवस के अवसर पर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, डॉ. देवव्रत जी, प्रधान संचालक आर्य वीर दल, श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री एस.एस.कोठारी जी, पूर्व न्यायाधीश राज. उच्च न्यायलय, श्री एस.के.शर्मा जी, मंत्री आर्य प्रतिनिधि प्रादेशिक सभा, श्री आलोक कुमार जी, कार्याध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय विश्व हिंदु परिषद इत्यादि महानुभावों ने मानव समाज के ऊपर ऋषि दयानंद के उपकारों को स्मरण करते हुए आर्यजनों को प्रेरणा प्रदान की। श्री एस.एस.कोठारी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती को युग प्रर्वतक बताते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद

- शेष पृष्ठ 5-6 पर

136वें निर्वाण दिवस के अवसर पर यज्ञ सम्पन्न करते यजमान परिवार

ध्वजारोहण करते श्री सज्जन सिंह कोठारी (पूर्व लोकायुक्त एवं न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय) **एवं मुख्य अतिथि श्री एस.के. शर्मा जी** (सहमन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)। **ध्वजारोहण के उपरान्त आर्यजनों को सम्बोधित करते श्री कोठारी जी एवं उपस्थित अतिथि एवं अधिकारीगण।**

स्वागत : मुख्य अतिथि श्री एस.एस. कोठारी जी व श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री योगेश मुंजाल जी व श्री अजय सहगल जी, स्वामी शान्ता जी व डॉ. स्वामी देवव्रत जी, श्रीमती कोठारी व श्रीमती उषाकिरण आर्य जी। श्री जय भगवान गोयल जी को वेद भगवान भेंट करते श्री श्री योगेश आर्य जी एवं श्री सुरेन्द्र रैली जी।

सम्मान : श्री योगेश मुंजाल जी, श्री मुकेश आर्य जी, श्री नितिज्जय चौधरी जी को वेद भगवान भेंट करते महाशय धर्मपाल जी। श्री आलोक कुमार जी को वेद भगवान भेंट करते सर्वश्री सतीश चड्डा जी, वागीश शर्मा जी, धर्मपाल आर्य जी, श्री कीर्ति शर्मा जी।

दिवस समारोह एवं एकरूपीय यज्ञ कार्यक्रम की चित्रमय झांकी

एकरूपीय यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में आचार्य शिवा शास्त्री एवं माता शान्तिदेवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की आचार्या तथा मन्त्रपाठ करती हुईं गुरुकुल की छात्राएं

यज्ञ करने से पूर्व ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मन्त्रों का पाठ करते हुए यजमान बच्चे-बच्चियां।

यज्ञ की ज्योति जलती रहे ! ओ३म् का झण्डा ऊंचा रहे! आर्यसमाज अमर रहे! के उदघोषों से गूंज उठा रामलीला

महर्षि के जीवन के अन्तिम दृश्यों को नाटिका रूप में देखकर सबकी आँखें हुई नम

निर्वाण दिवस के अवसर पर महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए उपस्थित आर्यजनों को उद्बोधन देते श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली सभा

Joys of Working Towards a Goal

The satisfaction gained out of creative activity leads one towards selfless service. Such an action is not without a purpose. An artist must have a pu rpose before he creates something. Aimless life makes life uninteresting. To aim high where a balanced mind exists, there is no place for worries. Happiness reigns supreme in the absence of agonies.

Some thinkers are of the opinion that contentment retards man's progress. They say that a contented society is afflicted with poverty and its wants are never fulfilled. Such a society is indifferent to modern inventions and therefore it cannot progress. But here by progress is meant the excessive accumulation of wordly objects and their availability to mankind. Therefore the question again arises whether wordly objects are really the giver of everlasting happiness. Does not the desire for these pleasures lead mankind towards unrest and conflict?

Does not a discontented mind consciously or unconsciously drag mankind towards a localised or even a global war? Thus the question of happiness or peace is totally lost.

Means - Happiness - Selfless Action

Material comforts serve a useful purpose in our life. None can deny this. The development of our body and its gratification is dependent on these means. These wordly objects are not in themselves the means through which we derive happiness or sorrow. The gratification of ou r desires or the lack of it makes us happy or unhappy. While sugar gives vitality to some it can prove fatal to others. Man should make use of worldly objects without attaching much importance to them. He should exercise discretion in the use of these objects. He must think that wordly

objects are not meant for one's pleasures but to serve a useful purpose in the continuation of life.

Because these objects are necessary for the maintenance of our life an effort will have to be made to acquire them. But these attempts will have to be free of greed or desires. The efforts made to obtain these objects must not have the slightest t~ace of attachment,. selfishness and greed. Such an effort .or a.cnon has been described as *Ntshham Karma* or Selfless Action In

the Gita. Action performed without a selfish motive is the means to do one's duty. Such an action is free from passion and desire. Selfless action will take us beyond the feeling of pleasu re and sorrow. Selfless action does not mean the performance of activities without any purpose. The goal or aim must always be before us but the action performed must be dispassionate. In this way an attempt will be made by all to fulfil the wants of the world. Attempts will be continuously made for the acquisition of wordly objects but not for the gratification of the

senses. Those who have the desire to be free from misery, to be ever happy, must perform selfless actions. Their actions will be performed with an equipoised mind. and work towards a mission are the keys to success in life. All efforts centred towards the realization of one's aim bring joy and happiness to one. Trying to realise an aim does of necessity foster desire. But if such an aim is devoid of passion and is for the highest good of mankind, the mind enjoys supreme bliss.

A person with a mission in life does not work for worldly gains. Before him there is a goal the attainment of which he devotes his entire life. He is often beset with obstacles, has to surmount difficulties, and undergoes unspeakable sufferings, but inspite of these he does not feel aggrieved. An ordinary person with mission smiles in the face of adversities. He experiences a delight which is above worldly pleasures. A patriot courts imprisonment to liberate his country from bondage. He bears insults and tolerates physical assaults. If he has to face the bullets of an infuriated police, he braves them ungrudgingly. He experiences supreme joy because he is laying down his life for a noble cause. To uphold his religious beliefs Swami Oayanand drank poison and forgave the person who administered it. Having the service of mankind at heart as his aim, Or Albert Schweitzer, the German Nobel prizewinner, spent his entire life serving the natives of West Africa at his mission called Lambarene. He found great pleasure in working among them although the comforts of sophisticated life were denied him. The deisre to liberate India from foreign domination made Chandra

Shekhar Azad, a member of a revolutionary party, face the gallows cheefully. It is said that while he was awaiting his fate in prison his weight increased by three pounds. All these men found extreme happiness in working towards the fulfilment of their noble aims. ***To be continued.....***

With thanks By:
"Source of Happiness"

पृष्ठ 5 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 136वां निर्वाण दिवस.....

सरस्वती ने वैदिक ज्ञान के द्वारा मानव समाज को कल्याण की राह दिखाई। हमें उनकी प्रेरणाओं और संदेशों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। श्री एस. के.शर्मा जी ने वैदिक संध्या को माध्यम बनाते हुए कहा कि संध्या में द्वेष भावना से मुक्त होने का संदेश प्राप्त होता है और यज्ञ के मंत्रों के बाद "इदन्नमम् की भावना को साकार करने के लिए हमें त्याग भावना को अपनाना चाहिए। डॉ. देवव्रत जी ने ऋषि दयानंद को वैदिक ज्ञान का सूर्य बताते हुए कहा कि हम सब ऋषि की प्रेरणा से प्रेरित होकर ज्ञान के दीपक बनें। श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ऋषि निर्वाण दिवस पर हम भीतर से अपने मन को संकल्पित करें, जिससे आर्यसमाज का सर्वांगीण विकास हो सके। आज महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति सभी आर्यजनों के मन में अत्यंत श्रद्धा, निष्ठा और आस्था का भाव प्रकट हो रहा था। जिस समय एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चों ने महर्षि दयानंद सरस्वती के निर्वाण पर आधारित नाटिका का मंचन किया तो ऐसा लगा कि मानो जैसे इस सन्धिवेला में चारों तरफ अलग तरह की खामोशी और उदासी-सी पसर रही हो, उपस्थित सभी आर्यजनों ने एक टक होकर इस नाटिका को बड़े ध्यान मगन होकर देखा और मन-ही-मन ऋषि दयानंद को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सूर्य लगातार अस्ताचल की ओर जा रहा था, देखते ही देखते अब वह समय आ गया था जिसका सभी को बेसबरी से इंतजार था। मंच के सामने हजारों की संख्या में कतारबद्ध होकर बैठे हुए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के बच्चे यज्ञ के आसन पर उपस्थित थे। सबके सामने यज्ञकुण्ड सहित यज्ञ का विधिवत सामान रखा हुआ था। आचार्य शिवा शास्त्री एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के द्वारा संचालित आर्य गुरुकुलों की छात्राओं के निर्देशन में एकरूपीय यज्ञ का शुभारंभ हुआ। जिसमें दयानंद आदर्श विद्यालय तिलक नगर, रत्नचंद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल मोतीनगर, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल शादी खामपुर, आर्य मॉडल स्कूल आदर्श नगर, एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, आर्य स्कूल बादली, आर्य पब्लिक स्कूल मॉडल बस्ती, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल अमर कालोनी, आर्य शिशु शाला ग्रेटर कैलाश, चंद्र आर्य विद्या मंदिर ईस्ट ऑफ कैलाश, आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस, दरियागंज, आर्य पब्लिक स्कूल श्री निवासपुरी, आर्य हंसराज माडल स्कूल, जहांगीरपुरी, आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव, आर्य गुरुकुल रानी बाग, आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, गुरु विरजानदं सस्कृतकुलम् हरिनगर, आर्य वीर दल मोती नगर, कीर्तिनगर, आर्य समाज प्रीत विहार इत्यादि आर्य संस्थाओं के 2000 से अधिक बच्चों ने सामूहिक यज्ञ किया। लगभग 250 बच्चे यज्ञ की व्यवस्था पूर्ण होने की वजह से भाग नहीं ले पाए।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विनय आर्य, श्री नीरज आर्य, श्री सुरेंद्र चौधरी, श्री बलदेव सचदेवा, श्री विजेंद्र आर्य, श्री नरेन्द्र गांधी, श्री बृहस्पति आर्य, श्री योगेश आर्य तथा श्री मुकेश आर्य आदि ने विशेष योगदान दिया। आर्य वीर दल विकासपुरी, कीर्तिनगर और मोती नगर की शाखाओं ने भी इस आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महाशय धर्मपाल मीड़िया सैंटर की ओर से इस पूरे आयोजन को कवर किया गया जिससे आस्था चैनल पर सुंदर मनोहारी कार्यक्रम को प्रसारित करने में आर्य केन्द्रीय सभा सफल हुई।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- संयोजक

आर्यसमाज हनुमान रोड के वार्षिकोत्सव पर

वैदिक सत्संग

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वैदिक सत्संग एवं यजुर्वेदीय यज्ञ का समापन 3 नवम्बर, 2019 होगा। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य इन्द्रदेव शास्त्री जी तथा भजन श्री जितेन्द्र आर्य के होंगे। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता के अन्य अनेक कार्यक्रम होंगे।

-विजय दीक्षित, मन्त्री

छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्वावधान में 17 नवम्बर 2019 को प्रात: 8 से 1 बजे तक गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली में छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार वितरण किया जाएगा। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित है।

- रामपाल शास्त्री, कार्यकर्ता, प्रधान

44वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज एल. ब्लॉक आनंद विहार, हरि नगर द्वारा 6 से 10 नवंबर 2019 तक 44वें वार्षिक उत्सव पर यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय जी के प्रवचन और श्रीमती कल्याणी जी के भजन होंगे। आप सह परिवार, इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त करें। *- महेन्द्र सिंह, मन्त्री*

भव्य वार्षिक उत्सव

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा दिनांक 11 से 15 दिसम्बर 2019 तक भव्य वार्षिक उत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रभातफेरी, ऋग्वेद पारायण महायज्ञ, वेद कथा, भजन प्रस्तुति, आर्य महिला सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन एवं अन्य कई विशेष आयोजन किए जाएंगे। *- विजेन्द्र काठपालिया, मन्त्री*

आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। *- सम्पादक*

पुरोहित एवं सेवक चाहिए

आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-110051 को एक सुयोग्य पुरोहित एवं एक सेवक की आवश्यकता है। उचित मानदेय के साथ-साथ आवास, बिजली, पानी की नि:शुल्क व्यवस्था आर्यसमाज की ओर की जाएगी। इच्छुक महानुभाव यथाशीघ्र सम्पर्क करें -

- यशपाल शर्मा, पधान,
मो.9810006667

वैवाहिक

वधु चाहिए

राजकीय सर्वोदय सी. सै. स्कूल (दिल्ली सरकार) में स्थाई शिक्षक के रूप में कार्यरत, आयु 30 वर्ष, कद 5.5 फुट, मासिक वेतन पांच अंकों में, सरल स्वभाव, सुन्दर वर के लिए **आर्य परिवार** की गृह कार्य में दक्ष, सुयोग्य सुन्दर वधु चाहिए। दिल्ली सरकार में शिक्षिका के रूप में सेवारत को वरियता। इच्छुक परिवार मो. 9313790501 पर सम्पर्क करें।

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। *- महामन्त्री*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ	
● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	50 रु.	30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	80 रु.	50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज के महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क एवं चौराहों के नामकरण

आवश्यक सूचना

अपने सेवा प्रकल्पों एवं लोकोपकारी कार्यों के कारण विख्यात आर्य समाज का भारत में अपना विशेष स्थान है। सम्पूर्ण भारत में सैंकड़ो से ज्यादा स्थानों पर सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहों के नाम आर्य समाज एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों के नाम पर रखे गए हैं, यह अपने आपमें गौरव की बात है। किन्तु इनकी जानकारी एवं रिकार्ड न हो पाना एक खेद का विषय भी है।

अत: भारत की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि आप कहीं भी आर्य समाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम पर किसी भी सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहे को देखें या आपके क्षेत्र में ऐसा कोई नया नामकरण हुआ हो तो कृपया इसकी सूचना/फोटो/सम्बन्धित प्रस्ताव/जानकारी **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें अथवा 9650183339 पर व्हाट्स एप्प पर भेजें।

शोक समाचार

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती नहीं रहे

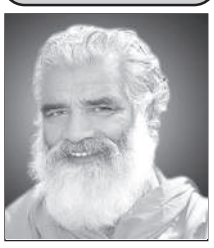

आर्यजगत के तपोनिष्ठ मूर्धन्य संन्यासी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री एवं गुरुकुल पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती का दिनांक 23 अक्तूबर, 2019 को लगभग 66 वर्ष की आयु में हृदयाघात से मुरादाबाद के अस्पताल में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ गुरुकुल पूठ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी एवं श्री शिवकुमार मदान जी सहित आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी दिल्ली से अन्य अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर उन्हें अन्तिम विदाई दी। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा गुरुकुल पूठ में स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती जी की अध्यक्षता में 26 अक्तूबर को सम्पन्न हुई, जिसमें अनेक प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, संन्यासियों, स्थानीय आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों के साथ-साथ दिल्ली सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने भी भी पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी को पौत्रशोक

आर्यसमाज कीर्ति नगर की वरिष्ठ सदस्या एवं प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी के सुपौत्र एवं श्री अरुण कथूरिया जी के सुपुत्र श्री वरुण कथूरिया जी का दिनांक 26 अक्तूबर, 2019 को लगभग 35 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी बाग स्थित शमशानघाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 28 अक्तूबर, 2019 को आर्यसमाज कीर्ति नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी एवं श्री शिव कुमार मदान जी के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती शशि मल्होत्रा को पतिशोक

स्त्री आर्यसमाज करोल बाग की प्रधाना एवं प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की कोषाध्यक्षा श्रीमती शशि मल्होत्रा जी के पूज्यपति श्री मदन मोहन मल्होत्रा जी का 27 अक्तूबर, 2019 की प्रात:काल निधन हो गया। उनका अन्तिमं संस्कार 28 अक्तूबर को दोपहर 12:30 बजे पूर्ण वैदिक रीति से सतनगर स्थित शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 29 अक्तूबर को आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें उनके निजी परिवार के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती सत्यवती सत्यपाल का निधन

आर्यसमाज दक्षिण अफ्रीका की सदस्या श्रीमती सत्यवती सत्यपाल जी का 29 अक्तूबर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 30 अक्तूबर को किया गया जिसमें आर्यसमाज अफ्रीका के सदस्यों एवं अधिकारियों ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 28 अक्तूबर, 2019 से रविवार 3 नवम्बर, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31/10-01/11, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 अक्तूबर, 2019

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

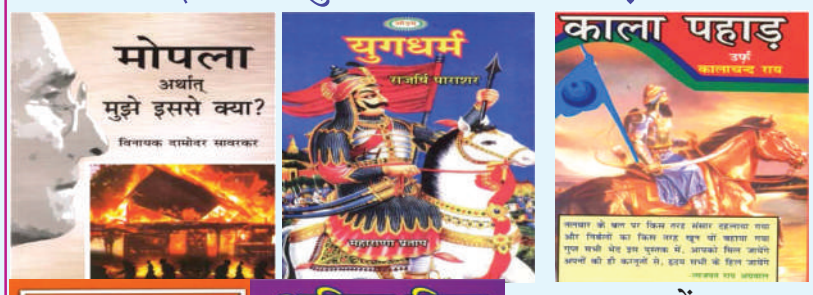

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

पुस्तकें
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339

प्रतिष्ठा में,

खुशखबरी! खुशखबरी!!
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2020 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

आओ जानें ! सत्य ? असत्य ?
- आओ पढ़ें ! सत्यार्थ प्रकाश

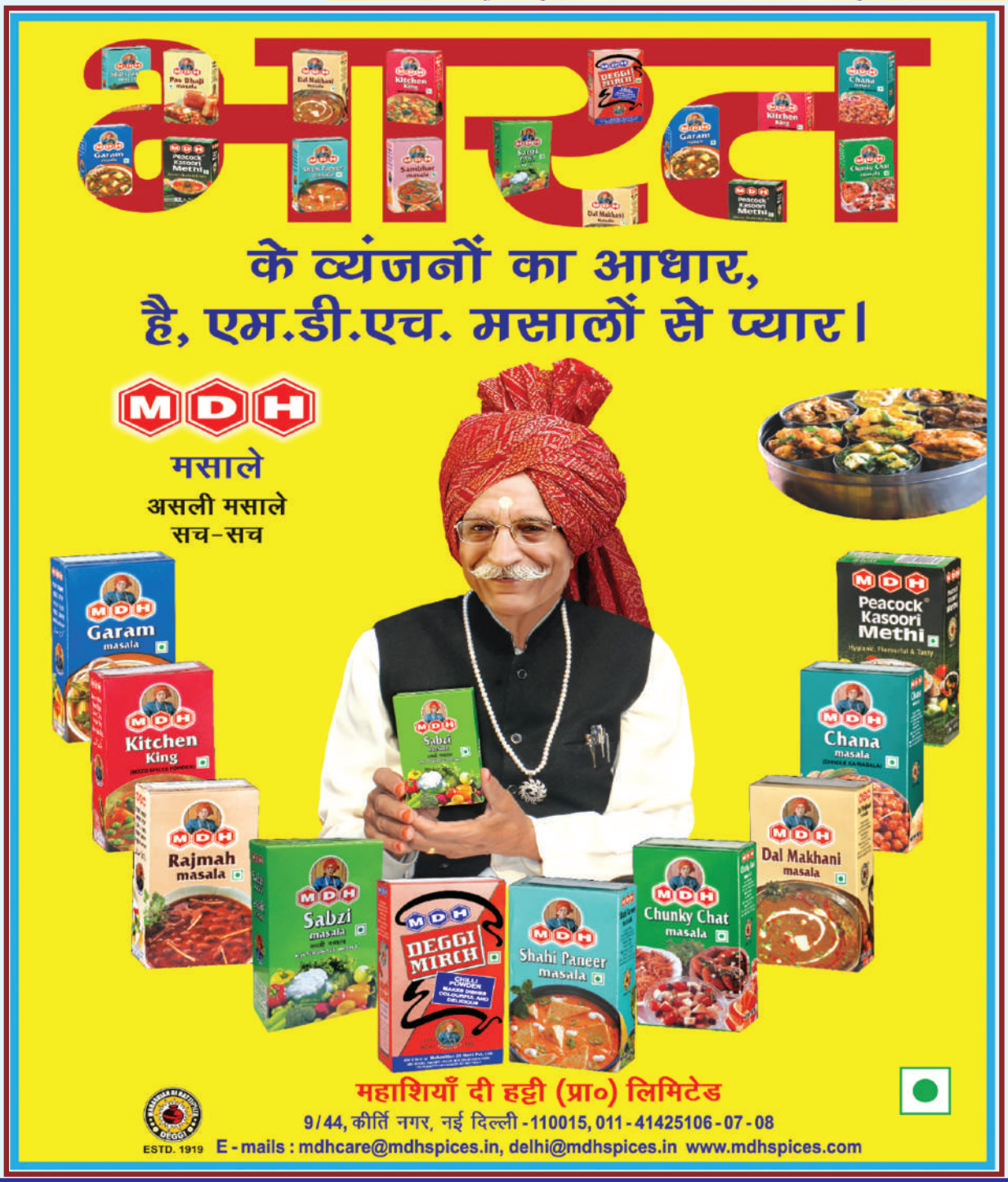

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह